

प्रकाशकीय निवेदन - २०००

धवला षट्खण्डागम सिद्धांत ग्रंथके प्रथम खंडके प्रथम भाग जीवस्थान सत्प्ररुपणाकी चतुर्थ आवृत्तिका संशोधित पुनर्मुद्रण करनेमें हम अपना सौभाग्य समझते हैं।

स्व. ब्र. पं. पद्मश्री सुमतिबाईजी शहा, संचालिका, श्राविका संस्था नगर, सोलापूर इन्होंने भ. महावीर रिसर्च सेंटर, श्राविका संस्थानगर सोलापूर की ओरसे धवला ग्रंथके इस प्रथम भाग के पुनर्मुद्रण के लिए आर्थिक सहयोग देकर जिनवाणीकी सेवाका जो महान आदर्श उपस्थित किया उसके लिए हम उनका हार्दिक अभिनंदन करते हुए उनके प्रति अनेकशः धन्यवाद प्रकट करते हैं।

इस ग्रंथराजके मूल सम्पादक स्व. पं. फूलचन्द्रजी सिद्धान्त शास्त्रीजी का वृद्धापकालके कारण स्वर्गवास होनेसे इस ग्रंथका पुनर्मुद्रण करते समय उनकी पावन स्मृतिको श्रद्धांजलि समर्पण कर हम समवेदना प्रकट करते हैं।

इस ग्रंथका प्रूफ संशोधन कार्य जीवराज जैन ग्रंथ मालाके संपादक स्व. पं. नरेन्द्रकुमार भिषीकर शास्त्री तथा सहाय्यक श्री. धन्यकुमार जैनी तथा मुद्रणकार्य स्टेप इन प्रोसेस, पुणे इनकेद्वारा संपन्न हुआ है। इनकेसहयोग के लिए हम आभार प्रदर्शित करते हैं।

रतनचंद सखाराम शहा.

मंत्री